CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

UPPSC

अध्यायवार मुख्य परीक्षा हल प्रश्न-पत्र

सामान्य अध्ययन

प्रश्नोत्तर रूप में

- **सामान्य अध्ययन 2018 - 2022 का हल प्रश्न पत्र**
  (नवीनतम संशोधित पाठ्यक्रम पर आधारित पेपर 1 से 6 में विभाजित)
- **4 वर्षों के निबंध का हल प्रश्न पत्र**
- **21 वर्षों के अनिवार्य हिंदी का हल प्रश्न पत्र**

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

अध्यायवार मुख्य परीक्षा हल प्रश्न-पत्र

सामान्य अध्ययन

प्रश्नोत्तर रूप में

यूपीपीएससी राज्य सिविल सेवा परीक्षा के नवीनतम
पाठ्यक्रम पर आधारित मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन
प्रश्न-पत्र-I, II, III, IV, V, VI एवं निबंध तथा
अनिवार्य हिंदी की अध्यायवार प्रस्तुति

संपादकः एन. एन. ओझा
(सिविल सेवा परीक्षाओं के मार्गदर्शन में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव)
लेखन एवं प्रस्तुतिः क्रॉनिकल संपादकीय समूह

CHRONICLE
Nurturing Talent Since 1990

पुस्तक के संबंध में

इस पुस्तक में यूपीपीएससी सामान्य अध्ययन मुख्य परीक्षा के हल प्रश्न पत्र को तीन भागों में विभाजित कर प्रस्तुत किया गया है। इसके प्रथम भाग में सामान्य अध्ययन (वर्ष 2018-2022), द्वितीय में निबंध (वर्ष 2019-2022) और तृतीय में अनिवार्य हिंदी (वर्ष 2002-2022) का अध्यायवार हल प्रश्न पत्र दिया गया है।

सामान्य अध्ययन के प्रश्नों का हल नवीनतम संशोधित पाठ्यक्रम पर आधारित है जिन्हें पेपर I से VI में विभाजित कर प्रस्तुत किया गया है। सामान्य अध्ययन खंड के नवीनतम पाठ्यक्रम में पेपर V और VI को मुख्य परीक्षा में शामिल किया गया है। पुस्तक में विगत 5 वर्षों में पूछे गए 'उत्तर प्रदेश विशेष' के प्रश्नों को विशेष रूप से दिया गया है। सम्बंधित प्रश्नों को शामिल करने का मूल उद्देश्य छात्रों को यह अवगत कराना है कि इन नवीनतम प्रश्न पत्रों में किस प्रकार के प्रश्न पूछे जायेंगे और परीक्षा में उन प्रश्नों को हल करते समय उसका उत्तर किस प्रकार दिया जाना चाहिए।

पुस्तक में विगत 4 वर्षों के निबंध और अनिवार्य हिंदी के 21 वर्षों का हल प्रश्न पत्र उसके पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यायवार प्रस्तुत किया गया है। निबंध के प्रश्न पत्रों का अध्ययन कर छात्र इसमें पूछे जाने वाले विषयों या मुद्दों से अवगत हो पाएंगे।

अनिवार्य हिंदी में प्रश्नों की प्रकृति विगत वर्षों के समान हीं होती है, लेकिन छात्र इसमें पूछे जाने वाले सरकारी एवं अर्द्धसरकारी पत्र लेखन, अधिसूचना, परिपत्र, कार्यालय आदेश, वर्तनी व वाक्य शुद्धी जैसे महत्वपूर्ण खण्डों जिनमें परीक्षा के समय त्रुटि होने की संभवाना होती है, उसका अभ्यास कर उन त्रुटियों से बचा जा सकता है।

यह हल प्रश्न पत्र सह पाठ्य सामग्री है जो छात्रों के लिए उपयोगी साबित होगा। पुस्तक के माध्यम से आप यह जान पाएंगे कि प्रश्नों के स्वरूप में किस प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं और इन प्रश्नों के उत्तर किस प्रकार से लिखे जाने चाहिए।

अत: आशा है कि उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग सिविल सेवा परीक्षा के नवीनतम संशोधित पाठ्यक्रम के अनुरूप संपूर्णता पर आधारित यह पुस्तक छात्रों के लिए एक सफल मार्गदर्शक साबित होगी।

संपादक

अनुक्रमणिका

सामान्य अध्ययन 1-168

प्रथम प्रश्न-पत्र

- भारतीय संस्कृति....3
- आधुनिक भारत का इतिहास....8
- स्वतंत्रता संग्राम एवं स्वतंत्रोतर भारत....12
- विश्व का इतिहास....13
- भारतीय समाज....15
- प्राकृतिक संसाधन....25
- भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल....28

द्वितीय प्रश्न-पत्र

- भारतीय संविधान....35
- केंद्र राज्य संबंध....39
- कार्यपालिका और न्यायपालिका....42
- शासन व्यवस्था....56
- अन्तरराष्ट्रीय एवं द्विपक्षीय संबंध....61

तृतीय प्रश्न-पत्र

- सामाजिक आर्थिक विकास....72
- कृषि विकास....77
- औद्योगिक विकास....80
- आधारभूत संरचना....85
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी....88
- पर्यावरणीय सुरक्षा एवं पारिस्थितिकी....96
- आन्तरिक व बाह्य सुरक्षा....102

चतुर्थ प्रश्न-पत्र

- नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिवृत्ति....110
- केस स्टडी....145

उत्तर प्रदेश विशेष

- पेपर-V....151
- पेपर-VI....157

निबंध 169-202

- साहित्य और संस्कृति....171
- सामाजिक क्षेत्र....176
- राजनैतिक क्षेत्र....180
- विज्ञान पर्यावरण और प्रौद्योगिकी....187
- आर्थिक क्षेत्र....187
- कृषि उद्योग एवं व्यापार....190
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम....193
- राष्ट्रीय विकास योजनाएं एवं परियोजनाएं....198

अनिवार्य हिंदी 203-288

- अवबोध एवं प्रश्नोत्तर....205
- संक्षेपण....226
- सरकारी एवं अर्ध सरकारी पत्र लेखन, कार्यालय आदेश, अधिसूचना, परिपत्र....235
- उपसर्ग एवं प्रत्यय प्रयोग....255
- विलोम शब्द....261
- वाक्यांश के लिए एक शब्द....264
- वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि....268
- लोकोक्ति एवं मुहावरे....273

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

सामान्य अध्ययन

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

भारतीय संस्कृति

प्रश्न:मौयकालिन कला एवं स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: सिन्धु घाटी सभ्यता व मौर्य काल के मध्य के युग को भारतीय कला का अन्धकार युग माना जाता है। इस अन्धकार युग के पश्चात् मौर्य काल भारतीय कला के स्वर्णिम काल के रूप में उदित हुआ। मौर्य शासकों ने कला के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया और अपने संरक्षण में कला को प्रश्रय दिया। मौर्यकालीन वैभव, आत्म-विश्वास और शक्तिशाली राजसत्ता का प्रतिबिम्ब तत्कालीन कला में भी झलकता है। "मौर्य कला भारतीय कला के इतिहास में युग-प्रवर्तक है।

- भारतीय स्थापत्य के एक महत्त्वपूर्ण चरण की शुरुआत मौर्यों के शासन के साथ होती है। मेगास्थनीज ने चन्द्रगुप्त मौर्य के महल को स्थापत्य की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बताया है।
- चंद्रगुप्त मौर्य का महल लकड़ी का बना हुआ था। ईसा पूर्व सन् 322-182बीसी में मौर्य काल में विशेषकर अशोक के राज्य में स्थापत्य कला ने अत्यधिक उन्नति की।
- मौर्यों की कला और स्थापत्य, फारसी और यूनानी प्रभाव को दर्शाते हैं। अशोक के शासन-काल में अनेक एकाश्म पत्थरों के खंभे स्थापित किए गए। इन खंभों में 'धम्म' की शिक्षाओं को अंकित किया गया है।

  इस काल में कला के दो स्वरूप परिलक्षित होते हैं। (1) राजकीय कला (2) लोक कला।
- राजकीय कला के अंतर्गत स्तम्भ, विहार , स्तूप जैसी संरचना का विकास हुआ तथा लोक कला के अंतर्गत मृदभांड, यक्ष - यक्षनी की मूर्ति तथा टेराकोटा का निर्माण किया गया था
- राजकीय कला के तहत पाटलिपुत्र में कुम्हरार से एक राजप्रसाद का अवशेष मिला है। एरियन ने इसे सूसा (मेसोपोटामिया) के राजप्रासादों से श्रेष्ठ माना है। मौर्य सभा का फर्श तथा छत लकड़ी से निर्मित था, जबकि भवन के स्तम्भ बलुआ पत्थर से निर्मित थे।
- पाषाण स्तम्भों से सुशोभित यह मौर्यकालीन सभा भवन भारतीय पुरातत्त्व की दृष्टि से सबसे प्राचीन है। इसके स्तम्भ अत्यन्त सुन्दर, सुडौल, सुस्निग्ध और गोलाकार हैं। अशोक द्वारा बनवाए गए स्तम्भ मौर्यकालीन कला के सर्वोत्तम नमूने हैं, जो कि उसने 'धम्म' के प्रचार के लिए बनवाए थे।
- शीर्ष पर जानवरों की आकृतियों वाले यह चमकदार खंभे, बहुत ही विशिष्ट और विलक्षण हैं।
- सारनाथ का खंभा जिसके शीर्ष पर शेर की आकृति है, भारत गणतंत्र के राष्ट्रीय चिह्न के रूप में स्वीकृत हुई है।
- हर खंभे का वजन 50 टन तथा उसकी ऊंचाई 50 फीट थी। सांची और सारनाथ के स्तूप मौर्यों की स्थापत्य-कला की उपलब्धि के प्रतीक हैं। सांची स्तूप के प्रवेश द्वार पर जातक-कथाओं का चित्रण उस समय के कलाकारों के सौंदर्यबोध और उनके कौशल का नमूना है।
- उत्तर प्रदेश में सारनाथ, प्रयाग, कौशाम्बी तथा नेपाल की तराई में लुम्बिनी और निग्लिवा में अशोक के बनवाए स्तम्भ मिले हैं। इन स्थानों के अतिरिक्त साँची, लौरिया, नन्दनगढ़ आदि स्थानों पर भी अशोक के स्तम्भ हैं। ये स्तम्भ एकाश्मक (Monolith) हैं तथा चुनार के बलुआ पत्थर से निर्मित हैं।
- प्रत्येक स्तम्भ की ऊँचाई 40-50 फीट है। चुनार की चट्टानों से पत्थरों को काटकर निकालना, उन्हें स्तम्भों का स्वरूप देना तथा विशाल स्तम्भों को देश के विभिन्न भागों में पहुँचना, नि:संदेह शिल्पकला तकनीक का एक अनुपम उदाहरण है
- अशोक के एकाश्म स्तम्भ भी बलुआ पत्थर से निर्मित है। स्तम्भ के दो भाग हैं- (1) गावदुम लाट (2) शीर्ष भाग।
- शीर्ष भाग का मुख्य अंश घंटा है, जो अखमिनी स्तंभ के आधार के घंटों से मिलता-जुलता है। इसमें अवान्गमुखी कमल के ऊपर चौकी बनी होती है, जिस पर चार पशुओं सिंह, अश्व, हाथी तथा बैल उकेरित हैं।

कन्दरा गुफा

- बराबर की पहाड़ियों में सुदामा गुफा, कर्णचौपर गुफा, लोमस ऋषि की गुफा तथा विश्व की झोपड़ी की गुफा है। लोमस ऋषि की गुफा, दशरथ द्वारा तथा अन्य अशोक द्वारा बनवाई गई थी।
- नागार्जुन पहाड़ी में स्थित गुफा- गोपिका गुफा, बहियत्तफा, बजकिर्का।
- अशोक ने राज्याभिषेक के 12 वें वर्ष में सुदामा गुफा आजीवकों को दान में दी तथा नागार्जुनी पहाड़ी की गुफा दशरथ ने दान में दिया।

लोक कला परखम के यक्ष, दीदारगंज की चामरग्राहिनी तथा बेसनगर की यक्षिणी लोककला के उदाहरण हैं। इस विषय में डॉ. स्मिथ ने लिखा है, "इन स्तम्भों का निर्माण, स्थानान्तरण और स्थापना मौर्ययुगीन शिल्प आचार्यों तथा शिला तक्षकों की बुद्धि और कुशलता के अद्‌भुत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।"

आधुनिक भारत का इतिहास

प्रश्न: भगत सिंह द्वारा प्रतिपादित 'क्रान्तिकारी दर्शन' पर प्रकाश डालिए। (यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: भगत सिंह तथा उनके क्रांतिकारी सहयोगियों ने पहली बार 'क्रांतिकारी संघर्ष के तरीके एवं क्रांति के लक्ष्य' के रूप में क्रांतिकारी दर्शन को प्रस्तुत किया।

- 1925 में अपने घोषणापत्र में इसने कहा कि हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का उद्देश्य उन तमाम व्यवस्थाओं का उन्मूलन करना है, जिनके तहत एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का शोषण करता है। अपनी गिरफ्तारी से पहले भगत सिंह का भी उग्रवाद तथा व्यक्तिगत आतंकवादी कार्यवाइयों से विश्वास उठ चुका था तथा वे मार्क्सवाद में विश्वास करने लगे थे। उनका मानना था कि व्यापक जनांदोलन ही सफल क्रांति लाने का एकमात्र तरीका है।
- सामान्य शब्दों में क्रांति का तात्पर्य है- जनता के द्वारा, जनता के लिये। इसी उद्देश्य से भगत सिंह ने 1926 में पंजाब में क्रांतिकारियों के खुले संगठन भारत नौजवान सभा के गठन में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। इसके गठन में उनकी प्रमुख भूमिका थी। भगत सिंह इस सभा के संस्थापक महामंत्री थे।
- भारत नौजवान सभा का उद्देश्य- युवकों, मजदूरों तथा किसानों के मध्य राजनीतिक कार्य करना, उन्हें संगठित करना तथा गांवों में सभा की शाखायें खोलना था। भगत सिंह तथा सुखदेव ने छात्रों के मध्य खुले तौर पर संवैधानिक कार्य करने हेतु लाहौर छात्र संघ का भी गठन किया।
- भगत सिंह तथा उनके कामरेड साथियों ने यह भी महसूस किया कि क्रांति का तात्पर्य है क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में समाज के दलित, शोषित व गरीब तबके के जनआंदोलन का विकास करना है।
- इसका पहला उद्देश्य था- राष्ट्रीय स्वतंत्रता की स्थापना के लिये साम्राज्यवाद को जड़ से उखाड़ फेंकना तथा समाजवादी समाज की स्थापना करना।
- समाजवादी समाज का तात्पर्य ऐसे समाज से था जहां 'व्यक्ति द्वारा व्यक्ति का शोषण न हो।
- एसेंबली बम कांड में भगत सिंह ने अदालत में कहा था कि क्रांति के लिये रक्तरंजित संघर्ष आवश्यक नहीं है व्यक्तिगत बैर के लिए भी उसमें कोई जगह नहीं है। यह पिस्तौल और बम की उपासना नहीं है। क्रांति से हमारा आशय यह है कि अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था समाप्त होनी चाहिये।

उन्होंने घोषित किया कि 'प्रगति के लिए संघर्षरत प्रत्येक व्यक्ति को अंधविश्वासों को आलोचना करनी ही पड़ेगी'। प्रचलित मान्यताओं की प्रत्येक व्यवस्था को प्रासंगिकता एवं सत्यता की कसौटी पर खरा उतरना होगा।

प्रश्न: प्रेस की आजादी के लिये संघर्ष में राष्ट्रवादी नेता बाल गंगाधर तिलक के योगदान का वर्णन कीजिए।
(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के जनक स्वराज्य की माँग रखने वाले और कांग्रेस की उग्र विचारधारा के समर्थक बाल गंगाधर तिलक ने 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं और मैं इसे ले कर रहूँगा, का नारा दिया था, उनकी बढ़ती लोकप्रियता के कारण ब्रिटिश सरकार ने उनके समाचार पत्रों के प्रकाशन पर रोक लगाने की कोशिश की।

- अपने राष्ट्रवादी लक्ष्यों के लिए जाने जाने वाले बाल गंगाधर तिलक ने सन 1881 में साप्ताहिक रूप में दो समाचार पत्रों का प्रकाशन किया जिसमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए सक्रिय रूप से प्रचार किया तथा बड़े पैमाने पर शिक्षा और राष्ट्रीय जागरूकता फैलाने का लक्ष्य रखा।
- उन्होंने इन समाचार पत्रों से लोगों के समाजिक जीवन में हस्तक्षेप करने के लिए सरकार के विचारों का विरोध भी किया।
- 1907 में भारत की आजादी की लड़ाई के दौर में प्रेस की आजादी के सवाल को लेकर सबसे ज्यादा जुझारू संघर्ष उग्र राष्ट्रवादी नेता बाल गंगाधर तिलक ने किया।
- जी. जी. अगरकर के साथ उन्होंने सन् 1881 में मराठी भाषा में 'केसरी' और अंग्रेजी में 'मराठा' नाम से दो अखबारों का प्रकाशन शुरू किया तथा उनके जरिये ब्रिटिश शासन के खिलाफ जनता में जागरूकता पैदा करना शुरू किया। साथ ही ब्रिटिश शासन के खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन चलाने के लिए भी जनता को प्रेरित करने का काम शुरू किया।
- राष्ट्रीयता की भावना का प्रचार-प्रसार करने के लिए गणपति महोत्सव, 1896 में शिवाजी जयन्ती के मध्यम से इस्तेमाल किया और राष्ट्रीय संघर्ष के लिए युवा मराठियों को तैयार किया।
- अकालग्रस्त क्षेत्रों के लिए सरकार द्वारा तय की गई संहिता की मराठी प्रतियां छपवाकर उन्होंने हजारों की तादाद में बँटवाई और किसानों से अपील की कि अगर अकाल के कारण उनकी फसलें नष्ट हो गई हों, तो वे भू-राजस्व या लगान कत्तई अदा न करें।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

सामाजिक आर्थिक विकास

प्रश्न: वित्तीय समावेशन, सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए विकास प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: वित्तीय समावेशन समाज के सभी जरुरतमंद वर्गों और विशेष रूप से निम्न आय समूह वाले कमजोर वर्गों तक विनियमित मुख्य धारा के सस्थागत भागीदारियों द्वारा उचित और पारदर्शी तरीके से सस्ती कीमत पर आवश्यक उचित वित्तीय उत्पादों और पहुंच सनिश्चित करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करता है।

- यह निम्न आय वर्ग तथा कमजोर समूह वाले वर्ग तक वितीय सेवाओं तथा वितीय साक्षरता की पहुँच की संकल्पना है आरबीआई द्वारा वित्तीय समावेशन के लिए राष्ट्रीय कार्यनीति (एनएसएफआई) 2019-24 तैयार की है।
- वितीय समावेशन के बिना संविधान की व सामाजिक न्याय की संकल्पना साकार नहीं हो सकती है क्योंकि इसके बिना समतामूलक समाज की स्थापना नहीं की जाती है।
- इसके तीन स्तम्भ जनधन-आधार-मोबाइल त्रयी है जिसके आधार पर गरीबी उन्मूलन और समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े लोगों की सहायता की जा रही है।

वितीय समावेशन निम्न प्रकार से सामाजिक न्याय की प्राप्ति में सहायक हो रहा है।

- यह ग्रामीणों को बैंकिंग सेवा प्रदान कार उन्हें देश की अर्थव्यवस्था से जोड़ता है।
- शहरी और अर्द्ध शहरी क्षेत्र के गरीबों को बैंकिंग सेवा प्रदान करता है।
- रोजगारपरक एवं गरीबी उन्मूलन योजनाओं को बैंक के माध्यम से गरीबों तक पहुंचाना।
- गरीबों को महाजनों एवं साहूकारों के ऋण जाल से बाहर निकलने में मदद करता है।
- बैंकिंग सुविधाओं से वंचित लोगों को वितीय सेवा उपलब्ध करवाता है।

प्रधानमंत्री जनधन योजना, स्वाभिमान योजना, स्वाबलंबन योजना; बैंक मित्र योजना, बैंक मित्र योजना, आधार भुगतान योजना प्रणाली, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टैंड-अप-इंडिया योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना के जरीय लोगों का वितीय समावेशन कर सामाजिक न्याय की प्राप्ति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाये जा रहे हैं।

प्रश्न: "समावेशी संवृद्धि अब विकासात्मक रणनीति का केन्द्रबिन्दु बन गयी है।" भारत के संदर्भ में इस कथन की विवेचना कीजिए। इस संवृद्धि की प्राप्ति हेतु उपचारात्मक सुझाव भी दीजिए।(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: समावेशी विकास आर्थिक विकास है जो पूरे समाज में उचित रूप से वितरित किया जाता है और सभी के लिए अवसर पैदा करता है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा वर्ष 2030 तक गरीबी के सभी रूपों (बेरोजगारी, निम्न आय, गरीबी इत्यादि) को समाप्त करने का लक्ष्य सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल के लक्ष्य-1 में निर्दिष्ट किया गया है।

- समावेशी विकास न केवल आर्थिक विकास है बल्कि यह एक सामाजिक एवं नैतिक अनिवार्यता भी है। समावेशी विकास के अभाव में कोई भी देश अपना विकास नहीं कर सकता है। समावेशी विकास न होने पर आय वितरण में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होगी जिससे धन का संकेंद्रण कुछ ही लोगों के पास होगा, परिणामस्वरूप मांग में कमी आएगी तथा GDP वृद्धि दर में भी कमी होगी।
- एकसमान समावेशी विकास न हो पाने के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में विषमता में वृद्धि होती है जिससे वंचित वर्ग विकास की मुख्य धारा से नहीं जुड़ पाते है।
- समावेशी विकास के अभाव के कारण कभी-कभी देश में असंतोष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है परिणामस्वरूप देश की भौगोलिक सीमा में सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद जैसी विघटनकारी प्रवृत्तियों का जन्म होता है।

समावेशी विकास हेतु सरकार द्वारा पहल:

- समावेशी विकास की अवधारणा सर्वप्रथम 11वीं पंचवर्षीय योजना में प्रस्तुत की गई। इस योजना में समाज के सभी वर्गों के लोगों के जीवन की गुणवत्ता सुधारने और उन्हें अवसरों की समानता उपलब्ध कराने की बात कही गई।
- 12वीं पंचवर्षीय योजना (वर्ष 2012-17) पूरी तरह से समावेशी विकास पर केंद्रित थी तथा इसकी थीम 'तीव्र, समावेशी एवं सतत् विकास' थी। इस योजना में गरीबी, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा आजीविका के अवसर प्रदान करने पर विशेष जोर दिया गया ताकि योजना में निर्धारित 8 प्रतिशत की विकास दर को हासिल किया जा सके।
- सरकार द्वारा समावेशी विकास की स्थिति प्राप्त करने के

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिवृत्ति

प्रश्न:लोक सेवकों की लोकतांत्रीय अभिवृत्ति एवं अधिकारीतंत्रीय अभिवृत्ति में अंतर बताइए।

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: एक सिविल सेवक के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण है- लोकतांत्रिक अभिवृत्ति। लोकतांत्रिक अभिवृत्ति से तात्पर्य ऐसी अभिवृत्ति से है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देती है। इसमें शामिल हैं:

- फैसले लोकप्रिय मत पर आधारित हों।
- बहुमत के विचारों को मान्यता देना।
- अधिकाधिक लोगों के हितों को बढ़ावा देना।
- निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा समर्थित।

इसके तहत अधिकतम लोगों के कल्याण हेतु कार्य किया जाता है। हमारे संविधान में उल्लेखित पिछड़े और अल्पसंख्यक समुदाय के विकास के प्रयासों को इस अभिवृत्ति के माध्यम से वास्तविक धरातल पर लाया जा सकता है। वर्तमान में शक्ति के केंद्रीयकरण की प्रवृत्ति और विवेकाधीन शक्तियाँ इसमें बाधक बन रही हैं।

लोकतांत्रिक अभिवृत्ति को निम्नलिखित उपायों द्वारा बढ़ाया जा सकता है:

- शैक्षिक पाठ्यक्रम में ऐसी अभिवृत्तियों को शामिल करना।
- प्रशिक्षण हेतु इस अभिवृत्ति से जुड़े मूल्यों पर अनुसंधान को बढ़ावा देना और एक सेट तैयार करना।
- कार्यस्थल पर सभी कर्मचारियों को निर्णय-निर्माण में भागीदारी हेतु प्रोत्साहित करना।
- प्रशासन में लोगों की भागीदारी बढ़ाने हेतु सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का अधिकाधिक प्रयोग करना।

लोकतांत्रिक अभिवृत्ति वर्तमान विश्व की सफलता के लिये कुंजी है। एक व्यक्ति, जो लोकतांत्रिक अभिवृत्ति रखता है, एक दूसरे के सहयोग और मदद को बढ़ावा देता है, जो समाज में न्याय की अवधारणा को मजबूत करता है। अत: संविधान के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये एक लोक सेवक में लोकतांत्रिक अभिवृत्ति का होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

नौकरशाही अभिवृति : लोक सेवकों का निर्धारित नियमों और दिशानिर्देशों के अनुसार निर्णय लेने की प्रक्रिया का सख्ती और कठोरता से पालन करना नौकरशाही रवैया है। इस रवैये के कुछ बुनियादी गुणों में निष्पक्षता, तटस्थता, गोपनीयता, अभिजात वर्ग, दृष्टिकोण आदि शामिल हैं।

यह उन अधिकारियों की अभिवृत्ति को संदर्भित करता है जो लक्षित वर्ग को ध्यान में रखते हुए नीतियों और योजनाओं को लागू करते हैं और एक बार कानून या नियम बन जाने के पश्चात किसी को भी मानदंडों में कोई छूट नहीं मिलती। अधिकारी तंत्रीय अभिवृत्ति कभी-कभी लालफीताशाही, इंस्पेक्टर राज और भ्रष्टाचार के कारण लोकतंत्र की भावना को प्रभावित करती है।

नौकरशाही के रवैये के गुण हैं:

- मानक संचालन प्रक्रिया का कड़ाई से अनुपालन।
- चूंकि जनता के परामर्श की आवश्यकता नहीं है, इसलिए निर्णय जल्दी लिया जा सकता है।
- नौकरशाही के रवैये के दोष हैं
- लालफीताशाही, क्योंकि लक्ष्यों को प्राप्त करने में कोई तात्कालिकता नहीं है।
- वे व्यवस्था में बदलाव का विरोध कर रहे हैं, जिससे ठहराव की स्थिति पैदा हो रही है।
- यह कठोर है; इसलिए सार्वजनिक सेवा वितरण प्रभावी नहीं हो सकता है।
- आम लोगों के प्रति उदासीनता।

प्रश्न:जनता के विरोध के संबंध में अनुनय की भूमिका की तर्क सहित व्याख्या कीजिए।

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: अनुनय किसी प्रकार के संचार के माध्यम से किसी व्यक्ति की अनुभूति, भावनाओं, व्यवहार, किसी वस्तु, मुद्दे या व्यक्ति के प्रति दृष्टिकोण को बदलने की एक विधि है। डॉ. रॉबर्ट सियाल्डिनी के अनुनय के छह सिद्धांत पारस्परिकता, कमी, अधिकार, निरंतरता, पसंद और आम सहमति बताया है यह मानव व्यवहार के लिए सार्वभौमिक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं:

अनुनय लोगों के व्यवहार में एक स्थायी परिवर्तन ला सकता है और सार्वजनिक नीतियों के कार्यान्वयन में अत्यधिक प्रभावी है बशर्ते उपकरण का सही तरीके से उपयोग किया जाए।

अनुनय के तत्व:

- उपकरण के रूप में शब्द, चित्र, ध्वनि आदि।
- प्रसारण के तरीके जैसे टेलीविजन, इंटरनेट, आमने-सामने संचार आदि।
- दूसरों को प्रभावित करने का एक जानबूझकर प्रयास।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

पेपर-V

प्रश्न:उन्नसवीं सदी में उत्तर प्रदेश में पुर्नजागरण के स्वरूप पर प्रकाश डालें। (यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: जब सम्पूर्ण भारत में राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, दयनानद सरस्वती जैसे प्रमुख समाज और धर्म सुधारकों के द्वारा भारत में पुनर्जागरण का आरम्भ किया गया उतर प्रदेश में भी 19 वीं शताब्दी के दौरान इसका अभ्युदय हुआ था परन्तु जिस समय बंगाल, पंजाब तथा बॉम्बे में ब्रहम समाज आर्य समाज, प्रार्थना समाज, सत्य शोधक मंडल, रामकृष्ण मिशन आदि संस्थाओं द्वारा सामाजिक धार्मिक पुनर्जागरण को बढ़ाबा दे रहे थे उसी दौर में ब्रह्म समाज की मात्र दो शाखाएं उत्तर प्रदेश में स्थापित हो पायी थी 19वीं सदी में कई भारतीय विचारक और सुधारक, समाज में सुधार लाने के लिए आगे आए। उनके मुताबिक समाज और धर्म आपस में जुड़े हुए थे। दोनों में सकारात्क विकास और देश के विकास को प्राप्त करने के लिए सुधार करने की जरूरत है। इसलिए हमारे सुधारकों ने भारतीय जनता को जगाने की पहल की। इन सुधारकों ने जागरूकता फैलाने के लिए कुछ संगठनों की स्थापना की।

- भारतेंदु हरिश्चंद के द्वारा 19 वीं शताब्दी के उतरार्ध में कवि वचन सुधा पत्रिका के माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन का समर्थन किया गया
- केशव चन्द्र सेन के नेतृत्व में ब्रह्म समाज का विस्तार बंगाल से बाहर हुआ एवं उत्तर प्रदेश, पंजाब व मद्रास में शाखाएं खोली गयी
- जोनाथन डंकन के द्वारा बनारस में संस्कृत विद्यालय की स्थापना की गई
- सर सैयद अहमद खान 1864 में गाजीपुर में 'वर्तमान में उत्तर प्रदेश' एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की थी। उन्होंने मोहम्मदन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज (एम.ए.ओ) जो बाद में 1875 में अलीगढ़ में अलीगढ़ मुस्मि विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। यहां मानविकी और विज्ञान के क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान की गई। उन्होंने अंग्रेजी पुस्तकों के अनुवाद के लिए एक साइंटिफिक सोसोइटी की स्थापना की
- 19 वीं सदी में इंग्लैंड में चलने वाले उदारवादी आंदोलन के प्रभाव में जब 1835 में भारतीय प्रेस पर लगा नियंत्रण हटाया गया तब देशी प्रेस उद्योग तेजी से फैलने लगा था इसी समय लखनऊ से भी 'एडवोकेट' नामक समाचार पात्र निकलने लगा था

प्रश्न:'हेरिटेज आर्क' क्या है ? पर्यटन संभावनाओं की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में इसके महत्व को रेखांकित कीजिए । (यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर: उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश हेरिटेज आर्क बनाया है। उत्तर प्रदेश का हेरिटेज आर्क टूरिस्ट सर्किट आगरा, लखनऊ और वाराणसी शहरों को शामिल किया गया है।

- राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में 'हेरिटेज आर्क' एक महत्वपूर्ण कदम है।
- उत्तर प्रदेश हेरिटेज आर्क भारत में आगरा से लखनऊ और वाराणसी तक फैला एक त्रिभुज नेटवर्क है, जो लगभग 700 किमी के क्षेत्र को कवर करता है।
- हेरिटेज आर्क देश और दुनिया के सारे पर्यटकों को अवसर देती है कि वे राज्य की समृद्ध संस्कृति से रूबरू हो सके। उत्तरप्रदेश के इस हेरिटेज आर्क में 25 क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है।
- हेरिटेज आर्क के अंदर आने वाले क्षेत्रों में विदेशी पर्यटकों की बढ़ोतरी होने से राज्य में व्यवसाय के बड़े अवसर मिलने की संभावना है।
- इससे प्रत्यक्ष रूप से रोजगार के मौके उत्पन्न होगें। उत्तर प्रदेश में घरेलू पर्यटकों में 2021-2022 में 27 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है
- पर्यटन क्षेत्र में तमिलनाडु के बाद उत्तर प्रदेश दूसरे सबसे बड़े योगदानकर्ता के रूप में उभरा है, जिसमें राष्ट्रीय पाई में 16 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी है।
- 2020-21 में 8.6 करोड़ पर्यटकों के मुकाबले 2021-22 में 10.9 करोड़ लोगों ने उत्तर प्रदेश का दौरा किया।
- राज्य ने 2021 में विदेशी पर्यटकों की यात्रा देखने वाले शीर्ष दस राज्यों में भी जगह बनाई। यह श्रेणी में सातवें स्थान पर रहा और कुल विदेशी पर्यटकों का 4 प्रतिशत से अधिक हिस्सा था।
- सर्विस इंडस्ट्री के साथ साथ, इन क्षेत्रों के पास बसे शिल्प और हैंडलूम कारोबार को भी बढ़ावा मिलेगा, जिससे लघु उघोगों में मजबूती आएगी।

16 नवंबर, 2022 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता से हुई कैबिनेट बैठक में राज्य की नई पर्यटन नीति-2022 को मंजूरी प्रदान की गई।

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

निबंध

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

निबंध (खंड-क)

साहित्य और संस्कृति

उत्कृष्ट साहित्य के नए मानक

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा 2022)

संस्कृत का एक प्रसिद्ध सूत्र-वाक्य **हितेन सह इति सष्टिमूह तस्याभाव: साहित्यम** के आधार पर उत्कृष्ट साहित्य के नए मानक का निर्धारण किया जा सकता है इस सूत्र वाक्य का अर्थ है की **साहित्य का मूल तत्त्व सबका हितसाधन** है इसलिए उत्कृष्ट साहित्य के नए मानक को इसी के अनुरूप होना चाहिए। गुप्त जी ने भी कहा है की **"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए"** अर्थात् साहित्य वैसा हो जो न सिर्फ मनोरंजन की वस्तु बनकर रह जाए बल्कि उसके प्रतिमान ऐसे हो जो समाज में परिवर्तन की दिशा तय कर लोगो को जागृत कर सके।

मुंशी प्रेमचंद के एक कथन को यहाँ उद्धृत करना उचित होगा, "जो दलित है, पीड़ित है, संत्रस्त है, उसकी साहित्य के माध्यम से हिमायत करना साहित्यकार का नैतिक दायित्व है।" अत: साहित्य के नए प्रतिमानों में इनको स्थान मिलना आवश्यक हो जाता है।

साहित्य समाज की धार्मिक भावना, भक्ति, समाजसेवा के माध्यम से मूल्यों के संदर्भ में मनुष्य हित की सर्वोच्चता को महत्त्व प्रदान करती है तथा नए प्रतिमान में यही दृष्टिकोण झलकने चाहिए जो मनुष्य जीवन के लिये उपयोगी सिद्ध हो, साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ-प्रदर्शक है। संस्कृति द्वारा संकलित होकर ही साहित्य **'लोकमंगल'** की भावना से समन्वित होता है।

सहित्य के नए प्रतिमान तुलसी दास जी के लोक मंगल से निकलता है जहाँ वो कहते हैं की - **कथा जो सकल लोक हितकारी अर्थात** साहित्य की रचना समाज के हित के लिये ही की जाती है और तुलसीदास जी ने तो समस्त काव्य लोकमंगल की भावना से ही रचा है।

साहित्य के प्रतिमान जीतने **उत्कृष्ट होंगे है, उसकी प्रभाव क्षमता भी उतनी ही अधिक होती है** परन्तु वर्तमान में भूमंडलीकरण और सोशल मीडिया के विस्तार के कारण हर व्यक्ति अपने विचार प्रकट करने के लिए स्वतंत्र है, अत: वहाँ साहित्यिक प्रतिमान स्थिर रहें, यह संभव भी नहीं है। साहित्य के बिना राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति निर्जीव है।

साहित्यकार का कर्म ही है कि वह ऐसे साहित्य का सृजन करे, जो राष्ट्रीय एकता, मानवीय समानता, विश्व-बंधुत्व और सद्भाव के साथ हाशिये के आदमी के जीवन को ऊपर उठाने में उसकी मदद करे। इसलिए यह आवश्यक है की सहित्य रचना के प्रतिमान उत्कृष्ट हो।

अब प्रश्न उठता है कि श्रेष्ठ साहित्य क्या है? साहित्यिक विधाओं का उद्देश्य क्या है? क्या आत्मसंतुष्टि अथवा सुखानुभूति या प्रेरणा या संदेश या जागृति? संवेदनहीन साहित्य समाज को कभी प्रभावित नहीं कर सकता और वह मात्र मनोरंजन कर सकता है। सिर्फ मनोरंजन द्वारा ही साहित्य को जीवित रखना संभव नहीं है।

अगर साहित्य के पूरे इतिहास को सामने रखकर देखा जाए तो सहज ही पता चल जाएगा कि महान साहित्य उसी को माना गया है जिसमें अनुभूति की तीव्रता और भावना का प्राबल्य रहा है। श्रेष्ठ साहित्य एक सार्थक, स्वतंत्र एवं संभावनाशील विधाओं से जीवन के यथार्थ अंश, खंड, प्रश्न, क्षण, केंद्रबिंदु, विचार या अनुभूति को गहनता के साथ व्यंजित करता है। श्रेष्ठ साहित्य को मापने का न कोई पैमाना है, न ही कोई मापदंड, क्योंकि साहित्य इतना विराट और इतना सूक्ष्म है कि उसको विश्लेषित करने की सामर्थ्य किसी में भी नहीं है। साहित्य का कार्य चुनौती देना या लेना नहीं है।

साहित्य के नए प्रतिमान **'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय'** पर आधारित होनी चाहिए किसी भी साहित्य को कालजयी बनाने में दो बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं- पहला समय की पहचान और उस काल की संवेदनाओं को आवाज देना और दूसरा समकालीन विश्व साहित्य से पूर्ण परिचय और उसके स्तर पर साहित्य रचना और यह तब ही संभव है जब साहित्य के नए प्रतिमान प्रासंगिक और उत्कृष्ट हो।

द्विखण्डी व्यक्तित्व में बंटी स्त्री

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा 2022)

शोचन्ति जामयो यत्र, विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता, वर्धते तद्धि सर्वदा ।।'

अर्थात् जिस स्थान पर नारी का अपमान होता है, वहाँ विनाश होना निश्चित है, और जहाँ उसका सम्मान होता है, वहाँ सदा उन्नति होती है। भारतीय समाज में नारी का स्थान हमेशा से उच्च माना गया है क्योंकि समाज को विनाश अथवा प्रगति के पथ पर मोड़ने वाली नारी ही है। किसी भी राष्ट्र का सबसे जीवंत अंग समाज है। समाज की कार्यशील इकाई परिवार है और परिवार की केन्द्रीय धुरी है - नारी। परन्तु जहाँ एक ओर नारी के व्यक्तित्व को इतना महान स्तर प्रदान किया गया है वहीं नारी को दूसरी ओर भोग की वास्तु के साथ-साथ अनेक प्रकार की सीमाओं में बांधकर उसके व्यक्तित्व को दोहरा बना दिया गया है या यूँ कहें की उसके व्यक्तित्व को बदल दिया गया है।

एक ओर जहाँ वह पवित्रता, कोमलता, मधुरता, प्रेम, वात्सल्य आदि दिव्य गुणों की प्रतिमा है। प्रसिद्ध कवि जयशंकर प्रसाद के शब्दों में - **'नारी तुम केवल श्रद्धा हो'** इसमें न कोई स्वार्थ, न कोई छल;

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

अनिवार्य हिंदी

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा)

अवबोध एवं प्रश्नोत्तर

प्रश्न:निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

जीवन को उसकी समग्रता में सोचना और जीवन को एक खास इरादे से सोचना दो अलग तरह की तैयारियां हैं और इस माने में साहित्य जब भी राजनीति की तरह भाषा का एकतरफा या इकहरा इस्तेमाल करता है, तो वह अपनी मूल शक्ति को सीमित या कुंठित करता है। राजनीति के मुहावरे में बोलते समय हम एक ऐसे वर्ग की भाषा बोल रहे होते हैं जिसके लिए भाषा प्रमुख चीज नहीं है, वह भाषा का दूसरे या तीसरे दर्जे का इस्तेमाल है: वह एक खास मकसद तक पहुंचने का साधन मात्र है। उसे भाषा की सामर्थ्य, प्रामाणिकता या सच्चाई में उस तरह दिलचस्पी नहीं रहती जिस तरह साहित्य की। उसकी भाषा प्रचार-प्रमुख रेटारिकल और नकली व्यक्तित्व की भाषा हो सकती है, क्योंकि राजनीति के लिए भाषा एक व्यावहारिक और कामचलाऊ चीज है जबकि साहित्यकार के लिए भाषा उस जिंदगी की सच्चाई का एक जीता-जागता हिस्सा है जिसे वह राजनीतिक, व्यावसायिक, व्यावहारिक या स्वार्थों की हिंसा, तोड़-फोड़ और प्रदूषण से बचा करके उसकी मूल गरिमा और शक्ति में स्थापित या पुनर्स्थापित करना चाहता है।

साहित्य का काम अपनी पहचान को राजनीति की भाषा में खो देना नहीं, बल्कि उस भाषा के छद्म से अपने को लगभग बेगाना करके अकेला कर लेना है, एक संत की तरह अकेला, कि राजनीति के लिए जरूरी हो जाए कि वह बारबार अपनी प्रामाणिकता और सच्चाई के लिए साहित्य से भाषा मांगे न कि साहित्य ही राजनीति की भाषा बनकर अपनी पहचान खो दे।

1. प्रस्तुत गद्य का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर: राजनीति में "अपनी सत्ता को बनाये रखने अथवा सत्ता प्राप्त करने की लड़ाई'' होती है, जबकि "साहित्य में सत्ता के लिए कोई सीधा संघर्ष नहीं होता। इसलिए जब साहित्य राजनीति की भाषा बन जाती है तब वह अपना महत्व खो देती है तथा पक्षपाती दिखने लगती है। साहित्य और राजनीति की यह पारस्परिकता नई नहीं है परन्तु उसका राजनीति के लिए एकतरफा इस्तेमाल से वह कमजोर दिखने लगती है। प्रेमचंद का साहित्य इसका प्रमाण है. कांग्रेस का समर्थक होने के बावजूद वे जमींदारों का समर्थन करते हुए देखकर कांग्रेसी नेताओं की निर्मम आलोचना करने में नहीं हिचकते। इसलिए उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है क्योंकि उन्होंने साहित्य का एकतरफा इस्तेमाल राजनीति के लिए नहीं किया था।

2. राजनीति की भाषा का लक्ष्य क्या होता है?

उत्तर: राजनीति में भाषा का लक्ष्य अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति करना तथा अपने खास मकसद को पूरा करना होता है। वह वैसी ही भाषा का सहारा लेता है जिससे लक्षित वर्ग तक उसकी बातें पहुँच जाए। उसका लक्ष्य भाषा के सामर्थ्य, सटीकता, तथा उसके सामर्थ्य का बोध करना नहीं होता है बल्कि वह पूरी तरह से प्रचार को प्रमुखता देने वाली तथा काम चलाऊ किस्म की होती है।

3. उपर्युक्त गद्यांश की रेखांकित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

साहित्य .....कुंठित करता है।

उत्तर: रेखांकित पंक्ति में यह कहने की कोशिश की गई है कि जब साहित्य , राजनीति की भाषा बन जाती है तब उसमें प्रयोग किये जाने वाले मुहावरे, भाषा तथा प्रयुक्त कथन अपना प्रभाव खो देते हैं तथा वह किसी दूसरे की आरोपित भाषा जैसे दिखें लगती है तथा वह पताहक वर्ग या समाज पर अपना प्रभाव छोड़ने में नाकाम होती है। जबकि लेखक को भी उसे सामर्थ्यवान और प्रभावी बनाने में दिलचस्पी नहीं होती है।

उसे भाषा ..... साहित्य की।

उत्तर: भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भाषा है तो साहित्य है और जब साहित्य होता है तब भाषा स्वत: ही विकासमान होती है। साहित्यकार के लिए भाषा साधन है, साध्य नहीं। किसी भी साहित्यकार के लिए भाषा सत्य तक पहुंचने का साधन होता है तथा साहित्य की रचना करते समय वह सभी प्रकार के आरोपण और पक्षपात से बचा कर उसे गरिमापूर्ण बनाता है तथा उसे राजनीति की भाषा बनने से बचाना है। क्योंकि राजनीति के भाषा का कोई महत्व नहीं है वह उसके लिए अपने स्वार्थों की पूर्ति का माध्यम है।

साहित्यकार ..... चाहता है।

उत्तर: राजनीति और भाषा का संबंध स्वार्थ की पूर्ति तक सीमित होता है क्योंकि राजनीति की भाषा हल्की और अप्रभाव पूर्ण होती है तथा उसका उद्देश्य किसी खास लक्ष्य की प्राप्ति तक सीमित होता है, उसकी भाषा कामचलाऊ, प्रचार करने वाली व्यवहारिक तथा नकली व्यक्तित्व वाले होती हैं।

संक्षेपण

प्रश्न:निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

भारत में अपना समाजशास्त्र रचने की आवश्यकता है। पश्चिम का समाजशास्त्र जिस मानव-केंद्रित सामाजिकता और उसकी आधारभूत समता की बात करता है, वह किंचित् अपर्याप्त है। मनुष्य तक ही जीवन सीमा नहीं है। मनुष्य जब अपने आसपास के चर-अचर जीवन के साथ ओतप्रोत है, आसपास की क्षति से जब उसकी भी क्षति होती है, तो उसका दायित्व तो बढ़ जाता है। यह सही है कि जिस प्रकार की तर्क-प्रज्ञा मनुष्य को प्राप्त है, वह अन्य प्राणी को नहीं, पर उस अन्य को भी कुछ ऐसा प्राप्त है, जो मनुष्य को नहीं - और उस अप्राप्त के प्रति मनुष्य को श्रद्धा होनी चाहिए। हमारा संगठन उनकी सत्ता को नकारकर या हेय मानकर होगा; जैसा पिछले तीन सौ वर्षों से हुआ है, तो यह जितनी उनकी क्षति करेगा उससे अधिक मनुष्य की क्षति होगी, यह बात तो अब प्रमाणित हो चुकी है। इसलिए समाजशास्त्र की मानव-केंद्रित दृष्टि का ध्यान सर्वभूतहित पर जाना चाहिए। दूसरी बात समता की है। सम शब्द का व्युत्पत्ति से प्राप्त अर्थ-जो सत् मात्र हो, अर्थात शुद्ध सत्ता हो, इसलिए समता को अर्थात शुद्ध समता को सर्वत्र देखना। समता इस प्रकार एकत्व है, एकत्व बुद्धि है, बराबरी नहीं हैं, क्योंकि पृथकत्व के बिना बराबरी की बात ही नहीं सोची जा सकती, दो वस्तुएं अलग होंगी, तभी वे बराबर या गैर-बराबर दिखेंगी, जब एक हैं तो फिर बराबरी या गैर-बराबरी का सवाल ही नहीं उठता।

1. प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर: भारतीय समाजशास्त्र।

2. नए भारतीय समाजशास्त्र की रचना की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर: भारत को अपना एक समाज शास्त्र रचने की आवश्यकता है, क्योंकि पश्चिम में रचित समाजशास्त्र जहां एक ओर भारतीय समाज के अनुकूल नहीं हैं तो वहीं वह दूसरी ओर जिस समानता और सामाजिकता की बात करता है वह भी अपने आप में पर्याप्त नहीं है। नए भारतीय समाज शास्त्र की रचना इसलिए भी आवश्यक है, क्योंकि पश्चिम का समाज जिस मानव केन्द्रित सामाजिकता और समता की बात करता है, वह अपने आप में अपर्याप्त और अपूर्ण है। इसमें समस्त चर अचर के कल्याण और समता की बात समाहित होनी चाहिए।

3. उपर्युक्त गद्यांश का संक्षेपण कीजिए।

उत्तर: भारत का समाजशास्त्र, पश्चिम के समाज शास्त्र के अनुकूल नहीं है तथा मानवीय समाज शास्त्र की रचना तब होती है जब वह मानव के इतर सम्पूर्ण चर-अचर को इसमें समाहित करता है तथा मानव जिस प्रज्ञा से युक्त है, उसमें उसे अन्य लोगों के प्रति श्रद्धा का भाव होना चाहिए।

जहाँ तक समता की बात है तो वह एक प्रकार का एकत्व है, जिसमें कोई छोटा-बड़ा न होकर गैर बराबरी पर आधारित होता है।

प्रश्न:निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। (यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2020)

विद्वानों का मानना है कि राजनीति ने भाषा को भ्रष्ट कर दिया है; शब्दों से उनके सही अर्थ छीनकर उन्हें छद्म अर्थ पहना दिए हैं। संसद, संविधान, कानून, जनहित, न्याय, अधिकार, साक्ष्य, जांच जैसे ढेरों शब्द अपना असली अर्थ खोकर बदशक्ल हो चुके हैं। शब्द भले ही अच्छा या बुरा कोई भी अर्थ प्रकट करता हो, जब आपना असली अर्थ खो देता है, तो वह बदशक्ल हो जाता है। भाषा का भ्रंश, अंततः सामाजिक मानवीय मूल्यों का भ्रंश है। कल्पना कीजिए कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से जो कहे उसका वही अर्थ ना हो, जो भाषा प्रकट करती है या ऐसे अनुभवों की पुनरावृत्ति के कारण दूसरा व्यक्ति उसे सही अर्थ में ना लेकर उसमें अनर्थ या अन्य अर्थ खोजने लगे तो क्या होगा? यह मनुष्य का मनुष्य पर से विश्वास उठने का मामला है, जो सामाजिक विश्रृंखलता का पहला और अंतिम चरण है।

पहला इसलिए कि भाषा को मनुष्य ने परस्पर संवाद और सही संप्रेषण के लिए गढ़ा है और अंतिम इसलिए कि आगे चलकर मनुष्य का कर्म भी भाषा के मूल अर्थ का नहीं उसके भ्रंश का रूप ले लेता है। यह इस तरह होता है कि छद्म अर्थ का वहन करते-करते भाषा अंततः हमारे कर्म को ही छद्म में बदल देती है। क्या हम भाषा को भ्रष्ट करने की परिणति राजनीतिक और सामाजिक जीवन के चरम पतन में नहीं देख रहे हैं?

1. प्रस्तुत गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर: भाषाई पतनशीलता

सरकारी एवं अर्ध सरकारी पत्र लेखन, कार्यालय आदेश, अधिसूचना, परिपत्र

प्रश्न:निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

1. अधिसूचना किसे कहते हैं? हिन्दी प्रदेश के न्यायालयों में हिन्दी के प्रयोग को अनिवार्य करने की एक अधिसूचना विधि मंत्रालय द्वारा दी गई है। उसका उपयुक्त प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर: अधिसूचना या विज्ञप्ति के अंतर्गत ऐसी सूचना आती हैं; जो नियुक्तियों, पुनर्नियुक्तियों, नियमों, आदेशों, स्थानांतरण, छुट्टी, प्रशिक्षण, सेवानिवृत्त, निधन आदि जो सरकारी सूचना को अधिसूचना या विज्ञप्ति कहा जाता है। आमतौर पर यह अधिसूचना गजट में प्रकाशित होती है। इसमें नियम आदेश तथा राजपत्रित अधिकारियों के आदेश स्थानांतरण, पदोन्नति, सेवानिवृत्ति आदि के आदेशों की सूचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं।

- महत्वपूर्ण उपाधि, नियुक्ति, आकस्मिक किसी प्रकार के महत्वपूर्ण व्यक्ति के राज-काज से संबंधित परिवर्तन पर या आदेश की सूचना अधिसूचना के माध्यम से निकाली जाती है। ऐसे आदेश व सूचना राजपत्रों में प्रकाशन के योग्य समझी जाती है।

अधिसूचना का नमूना

विधि मंत्रालय भारत सरकार
संख्या 26, 13/3-2, 2022
नई दिल्ली ; दिनांक 10-10-2022
अधिसूचना

राष्ट्रपति अगला आदेश जारी होने तक हिंदी प्रदेश के सभी उच्च और अधीनस्थ न्यायालाओं में हिंदी के प्रयोग को अनिवार्य करने का आदेश जारी करते हैं।

हस्ताक्षर
अ ब स
प्रमुख सचिव
विधि मंत्रालय

प्रतिलिपि: निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आदेश हेतु प्रेषित
1. देश भर में स्थापित उच्च न्यायलय व अधीनस्थ न्यायालय
2. श्री क ख ग विधि मंत्रालय

हस्ताक्षर
अ ब स
प्रमुख सचिव
विधि मंत्रालय

2. परिपत्र किसे कहते हैं? जिला अधिकारी की ओर से जिले के सभी ग्राम प्रधानों के लिए सफाई व्यवस्था पर ध्यान रखने के लिए एक परिपत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर: जब कोई सूचना, निर्देश अथवा अनुदेश अपने अधीन कार्यालय या कार्यालयों को देनी हो, तो एक परिपत्र निकाला जाता है जिस पर या जिसके साथ नत्थी एक अलग तावपर सारे अमला (कर्मचारीगण) के हस्ताक्षर हो जाते हैं ताकि सूचना पाने का प्रमाण रहे। जब कोई सूचना या निर्देश एक साथ अनेक कार्यालयों को प्रेषित की जाती है, तो उसे परिपत्र कहते हैं। सूचना की पुष्टि के लिए प्राय: परिपत्र के साथ एक अलग नोटिस प्रेषित की जाती है। प्राय: कार्यालयों में परिपत्र के मुद्रित फार्म होते हैं जिन पर उस कार्यालय या कार्यालय का नाम मुद्रित रहता है। अधिकारियों आदि को सूचनार्थ भेजा जाने वाला आधिकारिक पत्र।

- परिपत्रों के संबोधन में कार्यलयों, विभागों, एककों के मुख्य अधिकारियों का संकेत होता है। परिपत्र को सभी मुख्य लोगों में प्रसारित करना आवश्यक होता है।
- परिपत्र को अंग्रेजी में Circular कहा जाता है। प्रत्येक कार्यलय में सामान्यत: कई सूचनाएँ, आदेश, प्रसारित होते रहते हैं।
- शासन प्रणाली में एक कार्यालय के अधीनस्थ कई कार्यलय होते हैं। उनमें कई कर्मचारी होते हैं। यह शृंखला ऊपर से नीचे की ओर चलती रहती है।
- वे सूचनाएँ एवं आदेश जो सभी अधीनस्थ अधिकारियों, कर्मचारियों के संबंध में होते हैं, वे परिपत्र के माध्यम से प्रेषित किये जाते हैं। जिन पत्रों के द्वारा सूचनाएँ आदेश प्रसारित किए जाते हैं, उन्हें परिपत्र कहा जाता है।

परिपत्र का नमूना शासकीय पत्र के रूप में

पत्रांक: 555 (01) 2021-2022

प्रेषक,
जिलाधिकारी
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
सेवा में,
सभी ग्राम प्रधान
प्रयागराज

विषय: सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान आकर्षित करने हेतु

महोदय,

मुझे आपसे यह कहने का निदेश हुआ है कि ग्राम पंचायत में सफाई की समुचित व्यवस्था की जाय। ग्राम पंचायत में सफाई

व्यवस्था सही नहीं होने की लगातार शिकायतें प्राप्त होने के कारण डेंगू जैसी महामारी की आशंका व्याप्त है।

कृत कार्यवाही शासन को अविलम्ब सूचित की जाए।

भवदीय

क ख ग

जिलाधिकारी

प्रयागराज

प्रश्न:अर्ध-सरकारी पत्र किसे कहते हैं? यह सरकारी पत्र से किस प्रकार भिन्न होता है? दोनों का अलग-अलग प्रारूप तैयार कीजिए।

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021)

उत्तर-शासकीय पत्र: यह किसी कार्यालय द्वारा किसी अन्य कार्यालय, अधिकारी, व्यक्ति, संस्था अथवा फर्म को ले जाते हैं।

कार्यालयी पत्राचार किसी सार्वजनिक पद पर आसीन व्यक्ति के साथ किया जाता है, इसलिए इस पत्र में मुख्य विषय पर सदैव ध्यान रखा जाता है। इन पत्रों के चार उपभाग होते हैं- सम्बोधन, समाचार, निवेदन, पता।

(1) अर्द्ध-सरकारी पत्र अनौपचारिक रूप से लिखे जाते हैं, जबकि सरकारी पत्र औपचारिक होते हैं।

(2) अर्द्ध-सरकारी पत्र सरकारी अधिकारियों को व्यक्तिगत नाम से लिखे जाते हैं, जबकि सरकारी पत्रों में पाने वाले अधिकारी के केवल पद का उल्लेख किया जाता है।

(3) अर्द्ध-सरकारी पत्र में सम्बोधन के अन्तर्गत 'प्रिय श्री' ..... या 'आदरणीय श्री' ..... का प्रयोग किया जाता है, महोदय का प्रयोग नहीं किया जाता। जब कोई अधिकारी समान पद, आयु का होता है, तो उसके लिए 'प्रिय श्री'..... का प्रयोग करते हैं और जब वह वयोवृद्ध एवं उच्च पदस्थ होता है तब 'आदरणीय श्री .....का प्रयोग करते हैं। इसके विपरीत सरकारी पत्र में सम्बोधन के अन्तर्गत 'महोदय' या प्रिय महोदय लिखा जाता है।

(4) अर्द्ध-सरकारी पत्रों का सम्बोधन पत्र प्राप्त करने वाले अधिकारी के नाम से होने के कारण इनमें आत्मीयता और मैत्री की भावना आ जाती है। सरकारी पत्रों में यह भावना नहीं होती है।

(5) अर्द्ध-सरकारी पत्र के अन्त में स्वनिर्देशन के लिए 'आपका' का प्रयोग किया जाता है, जबकि सरकारी पत्रों में 'भवदीय' का प्रयोग किया जाता है।

(6) अर्द्ध-सरकारी पत्र के समापन पर भेजने वाले अधिकारी का केवल नाम दिया जाता है, उसका पद अथवा मुहर नहीं होती, जबकि सरकारी पत्रों में नाम के बाद पद का उल्लेख आवश्यक रूप से रहता है।

(7) अर्द्ध-सरकारी पत्र में प्रेषिती का नाम, पद व पता ऊपर न लिखकर पत्र के अन्त में बायीं ओर लिखा जाता है। इसके विपरीत सरकारी पत्रों में पत्र प्राप्त करने वाले अधिकारी का नाम, पद और पता पत्र के ऊपर प्रेषक अधिकारी के नाम, पद और पते के बाद लिखा जाता है।

(8) अर्द्ध-सरकारी पत्र में 'मैं' सर्वनाम का प्रयोग होता है, जबकि सरकारी पत्र में 'हम' सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

(9) भारत सरकार के विभिन्न मन्त्रालयों में आपस में पत्रों के आदान-प्रदान के लिए शासकीय पत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसके लिए अर्द्ध-शासकीय पत्रों का प्रयोग किया जाता है।

ये पत्र सरकारी अधिकारियों द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर विचारों या सूचना के आदान-प्रदान या प्रेषण के लिए लिखे जाते हैं। कई बार सरकारी व्यवस्था के फलस्वरूप कोई मामला उलझ जाता है तब अपने समकक्ष अथवा अपने से कनिष्ठ स्तर के अधिकारियों को प्रस्तावित कार्य शीघ्र निस्तारण हेतु जिस पत्र का प्रयोग किया जाता है उसे अर्द्ध-सरकारी पत्र कहा जाता है।

सरकारी पत्र का प्रारूप

उ.प्र. शासन

विभाग, लखनऊ (उ.प्र.)

पत्र क्र. .....

दिनांक 2022

प्रति,

संचालक, रोजगार एवं प्रशिक्षण उ.प्र.

सिविल सेन्टर, लखनऊ

विषय : प्रशिक्षण स्तर में सुधार लाना

सन्दर्भ : केन्द्र सरकार श्रम विभाग का पत्र क्र 000 दिनांक DD/MM/2022

महोदय,

.....

.....

भवदीय

क ख ग

अवर सचिव

लखनऊ शासन

जनशक्ति नियोजन विभाग, लखनऊ

अर्द्ध सरकारी पत्र का प्रारूप

नाम .....

पद नाम .....

विभाग .....

विषय : .....

अर्ध सरकारी पत्र संख्या .....

प्रिय महोदय ,

उक्त विषय में आपसे अपेक्षा है कि .....

.....

विश्वसनीय

अ.ब.स.

नाम .....

पद .....

शासकीय पता .....

.....

प्रश्न:नगर महापौर की ओर से महानगर में डेंगू से हो रही मृत्यु संबंधी एक सरकारी पत्र उत्तर प्रदेश शासन को लिखिए।
(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021)

उत्तर :

पत्रांक .....
दिनांक .....
स्थान .....

प्रति,
उत्तर प्रदेश शासन

विषय : नगर महापौर की ओर से महानगर में डेंगू से हो रही मृत्यु।

महोदय,

मुझे आपसे यह कहने का निदेश हुआ है महानगर में डेंगू से कई लोगों की मृत्यु हो रही है। इसकी रोकथाम हेतु समुचित कार्यवाही की जा रही है।

भवदीय
क ख ग
उत्तर प्रदेश शासन

प्रश्न:निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:
(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2020)

1. **कार्यालय आदेश किसे कहते हैं? शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की ओर से जारी विशेष छात्रवृत्ति योजना संबंधी कार्यालय आदेश का प्रारूप तैयार कीजिए।**

उत्तर: कार्यालय आदेश आंतरिक प्रशासन सम्बन्धी अनुदेश जारी करने के लिए अधिकारियों /कर्मचारियों दोनों के लिए लिखा जा सकता है।

कार्यालय आदेश पत्रों के माध्यम से कार्यालय से संबंधित विभाग, मंत्रालय तथा कर्मचारियों की नियुक्ति, स्थानांतरण, पदोन्नति आदि के संबंध में आदेश दिया जाता है।

- प्रारम्भ में संख्या, कार्यालय का नाम, दिनांक और फिर कार्यालय- आदेश होता है। आदेश के अन्त में दायीं ओर आदेशकर्ता अधिकारी के हस्ताक्षर, पदनाम लिखा रहता है।
- यह आदेश कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों /कर्मचारियों एवं दो अनुभागों के बीच काम के वितरण के लिए लिखा जाता है।
- अधिकारियों/कर्मचारियों का एक कार्यालय या अनुभाग के बीच काम के वितरण हेतु लिखा जाता है।
- आकस्मिक अवकाश व प्रतिबंधित अवकाश को छोड़कर सभी प्रकार की छुट्टियों की मंजूरी के साथ-साथ अन्य नियमित प्रशासनिक कार्यों के लिए लिखा जाता है।

भाषा

- कार्यालय आदेश अन्य पुरुष शैली में लिखा जाता है।
- इसमें सूचनापरक भाषा का प्रयोग किया जाता है।
- भाषा सरल, स्पष्ट तथा सीधी होती है।
- ऐसे पत्रों में किसी प्रकार की औपचारिकता नहीं बरती जाती।

विशेष छात्रवृत्ति योजना हेतु कार्यालय आदेश

संख्या 12233/15/2019
उत्तर प्रदेश सरकार
शिक्षा मंत्रालय
केन्द्रीय सदन
गोमती नगर, लखनऊ
दिनांक .....

कार्यालय आदेश

मुख्य सचिव श्री अ द्वारा एतद हेतु शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार की तरफ से उत्तर प्रदेश के समस्त जिलाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वे अपने-अपने जिले के विद्यालयों में सम्बन्धित अधिकारियों के माध्यम से सरकार द्वारा चलाई जा रही विशेष छात्रवृति योजना का लाभ, लाभार्थियों को प्राप्त हो इसकी सुनिश्चित व्यवस्था कर शासन को इससे अवगत कराएं।

हस्ताक्षर
क ख ग
मुख्य सचिव

प्रतिलिपि सूचनार्थ प्रेषित

1. सम्बन्धित अनुभाग
2. समस्त जिलाधिकारी

2. **मुखिया की ओर से पंचायत में कोविड-19 से हो रही मृत्यु संबंधी एक सरकारी पत्र जिलाधिकारी को लिखिए।**

उत्तर:

जिलाधिकारी को पत्र

पत्र संख्या : /110 /9/18
ग्राम पंचायत 6
ग्राम : अ ब स
तहसील : .....
जिला : .....

प्रेषक,
मुखिया
ग्राम : अ ब स

प्रेषित-
सेवा में,
जिलाधिकारी
जिला - ख

विषय : कोविड 19 से होने वाली मृत्यु के सम्बन्ध में

महोदय,

मैं मुखिया ग्राम अ ब स अपने ग्राम पंचायत में कोविड 19 से होने वाली मृत्यु से आपको अवगत करा रहा हूँ तथा आपसे यह अपेक्षित अनुरोध करता हूँ कि हमारे ग्राम पंचायत में कोविड 19 के मरीजों की पहचान की उपयुक्त व्यवस्था करने की कृपा की जाए, ताकि इससे पीड़ित मरीजों को चिह्नित कर किसी अलग स्थान पर अलगाव की व्यवस्था कर उन्हें अलग करके रखा जा सके।

साथ ही कोविड 19 से मृत व्यक्तियों के अंतिम संस्कार की भी समुचित व्यवस्था को सुनिश्चित करने की कृपा की जाए, जिससे की इस बीमारी का प्रसार रोका जा सके।

विलोम शब्द

प्रश्न:निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए:
विपन्न, महत्ता, स्तुत्य, सद्भाव, विरल, शीर्ष, समष्टि, अपराधी, अवशेष, एकत्र
(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर:

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
विपन्न	सम्पन्न	शीर्ष	तल
महत्ता	लघुता	समष्टि	व्यष्टि
स्तुत्य	निंद्य	अपराधी	निरपराध एवं अनपराधी
सद्भाव	दुर्भाव	अवशेष	नि:शेष
विरल	सघन	एकत्र	विकीर्ण

प्रश्न:निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए:
अनुक्रिया, अधिष्ठित, वादी, आगमन, सज्जन, सुपुत्र, राग, सम्मुख, सलज्ज, उदात्त
(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021)

उत्तर :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अनुक्रिया	प्रतिक्रिया	सुपुत्र	कुपुत्र
अधिष्ठित	अनधिस्ठिति	राग	द्वेष, विराग
वादी	प्रतिवादी	सम्मुख	विमुख
आगमन	प्रस्थान	सलज्ज	निर्लज्ज
सज्जन	दुर्जन	उदात्त	अनुदात

प्रश्न:निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए:
सुषुप्ति, पूर्व, प्रसन्न, परकीय, महान, ज्ञानी, लघु, नीति, शोक, विघ्न (यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2020)

उत्तर :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
सुषुप्ति	जागृति	ज्ञानी	अज्ञानी
पूर्व	पश्चात	लघु	दीर्घ
प्रसन्न	अप्रसन्न	नीति	अनीति
परकीय	स्वकीय	शोक	आनन्द
महान	तुच्छ	विघ्न	निर्विघ्न

प्रश्न:निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए:
परिचित, आपत्ति, पूर्ण, धरती, प्रिय, जय, विहित, स्निग्ध, भय, शत्रु। (यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2019)

उत्तर :

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
परिचित	अपरिचित	जय	पराजय
आपत्ति	अन्नापत्ति	विहित	निहित
पूर्ण	अपूर्ण	स्निग्ध	
धरती	आकाश	भय	निर्भय
प्रिय	अप्रिय	शत्रु	मित्र

प्रश्न:निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखित:
आवरण, कृतज्ञ, अज्ञ, नैसर्गिक, अधम, आहूत, सकर्मक, मान, घात, वैतनिक
(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2018)

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
आवरण	अनावरण	आहूत	अनाहूत
कृतज्ञ	कृतघ्न	सकर्मक	अकर्मक
अज्ञ	सर्वग्य	मान	अपमान
नैसर्गिक	कृत्रिम	घात	प्रतिघात
अधम	उत्तम	वैतनिक	सवैतनिक

प्रश्न:निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए:
अभिज्ञ, अपसरण, बाह्य, ज्येष्ठ, स्थावर, धृष्ट, निषिद्ध, गौरव, परोक्ष, ह्रास
(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2017)

उत्तर:

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अभिज्ञ	अनभिज्ञ	धृष्ट	विनीत
अपसरण	अभिसरण	निषिद्ध	विहित
बाह्य	आभ्यान्तर	गौरव	लाघव
ज्येष्ठ	कनिष्ठ	परोक्ष	प्रत्यक्ष
स्थावर	जंगम	ह्रास	वृद्धि

वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि

प्रश्न:निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए:

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

1. तुम्हारे हर काम गलत होते हैं।

उत्तर: तुम्हारा हर काम गलत होता है।

2. दंगे में कई निरपराधी व्यक्ति मारे गए।

उत्तर: दंगे में कई निरपराध मारे गए।

3. तुम कौन गांव में रहते हो?

उत्तर: तुम किस गांव में रहते हो।

4. यह बात उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है।

उत्तर: यह बात उदाहरण से पुष्ट की जा सकती है।

5. प्रेमचन्द अच्छी कहानी लिखे हैं।

उत्तर: प्रेमचंद ने अच्छी कहानी लिखी है।

प्रश्न: निम्न शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिए:

अनुसुइया, वहिर्गमन, मध्यान्ह, प्रज्ज्वल, कृशांगिनी

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2022)

उत्तर :

अशुद्ध शब्द	वर्तनी संशोधन	अशुद्ध शब्द	वर्तनी संशोधन
अनुसुइया	अनसूया	प्रज्ज्वल	प्रज्वल
वहिर्गमन	बहिर्गमन	कृशांगिनी	कृशांगी
मध्यान्ह	मध्याह्न		

प्रश्न:निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए:

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021)

1. तुम तुम्हारी किताब ले जाओ।

उत्तर : तुम अपनी किताब ले जाओ।

2. यही सरकारी महिलाओं का अस्पताल है।

उत्तर : यह महिलाओं का सरकारी अस्पताल है।

3. यह एक गहरी समस्या है।

उत्तर : यह एक गंभीर समस्या है।

4. मोहन आगामी वर्ष कलकत्ता गया था।

उत्तर : मोहन विगत वर्ष कलकत्ता गया था।

5. गणित एक कठोर विषय है।

उत्तर : गणित एक कठिन विषय है।

प्रश्न:निम्न शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिए:

व्यवहारिक, तत्कालीक, आशीर्वाद, पुज्यनीय, इच्छिक

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2021)

उत्तर :

अशुद्ध शब्द	वर्तनी संशोधन	अशुद्ध शब्द	वर्तनी संशोधन
व्यवहारिक	व्यावहारिक	पुज्यनीय	पूजनीय
तत्कालीक	तात्कालिक	इच्छिक	ऐच्छिक
आशीर्वाद	आशीर्वाद		

प्रश्न:निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2020)

1. निरपराधी को दंड नहीं मिलनी चाहिए।

उत्तर : निरपराधी को दंड नहीं मिलनी चाहिए।

2. आप खाए कि नहीं?

उत्तर : आप खाए की नहीं।

3. लड़की ने दही गिरा दी।

उत्तर : लड़की ने दही गिरा दिया।

4. आपके दवा से वह आरोग्य हुआ।

उत्तर : आपकी दवा से वह स्वस्थ हुआ।

5. कमरा लोगों से लबालब भरा है।

उत्तर : कमरा लोगों से ठसाठस भरा है।

प्रश्न:निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिए:

सिंहिनी, छुद्र, चर्मोत्कर्ष, चिन्ह, बरबर्ता

(यूपीपीएससी मुख्य परीक्षा, 2020)

उत्तर :

अशुद्ध शब्द	वर्तनी संशोधन	अशुद्ध शब्द	वर्तनी संशोधन
सिंहिनी	सिंहनी	चिन्ह	चिह्न
छुद्र	क्षुद्र	बरबता	बर्बरता
चर्मोत्कर्ष	चरमोत्कर्ष		